

प्रथम दिवस आवरण First Day Cover



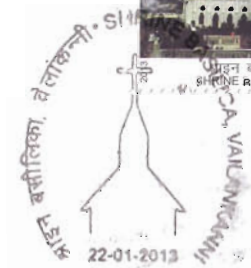
श्राइन बसीलिका, वेलांकन्नी  
SHRINE BASILICA ,VAILANKANNI

500

भारत INDIA



श्राइन बसीलिका वेलांकन्नी  
SHRINE BASILICA, VAILANKANNI



22-01-2013

नई दिल्ली 110001, NEW DELHI

## Shrine Basilica, Vailankanni

The Shrine Basilica of Our Lady of Good Health, Vailankanni is a Roman Catholic Church in Vailankanni, a hamlet on the sandy shores of the Bay of Bengal, in the State of Tamil Nadu. It is located 350 kilometers south of Chennai (Madras) and 12 kilometers south of Nagapattinam. It was raised to the status of an independent Parish in 1771.

The history of the Shrine goes back to the 16<sup>th</sup> century when Mother Mary, Mother of Jesus is said to have appeared to a shepherd boy and to a milk vendor. In the 17<sup>th</sup> century Mother Mary is believed to have saved Portuguese sailors from a ship wreck in the Bay of Bengal. The grateful sailors built at Vailankanni, where they landed, a small shrine in honour of Mother Mary who they trusted granted them safety. The sailors adorned it with sacred image made of Chinese art. From that time onwards, this seat of devotion has become famous.

Vailankanni was under the ecclesiastical jurisdiction of the Bishop of the Diocese of Mylapore (a suburb of Chennai). During that period, the Diocese of Mylapore was administered under the Portuguese 'Padroado' (patronage). Under the Padroado system, the King of Portugal met all the expenses incurred by the Diocese of Mylapore, which remained under the ecclesiastical jurisdiction of the Roman Pontiffs.

Until 1847, the priests of St. Franciscan Missionaries who had looked after the province of Goa and Mylapore also looked after Nagapattinam and Vailankanni. The Franciscan origin and ownership of the Shrine was also perpetuated, by giving the place of honor to two Franciscan saints, St. Anthony of Lisbon and St. Francis of Assisi, on either side of the miraculous image of 'Our Lady', on the High Altar until 1961.

The word 'Basilica' is derived from the Greek word 'Basilike' and it originally signified a Royal Hall. In course of time, this word had come to mean a large and beautiful hall. Today, a Basilica is a consecrated

Church usually built with the front facing the East, and generally constructed in one of the classical styles of architecture. It is now stipulated that a church, in order to be called a Basilica, should contain some work of art, or it should house the body of a saint or a celebrated image much venerated in the land, or be a pre-eminent place of pilgrimage.

His Holiness Pope John XXIII, issued orders raising the Shrine to the exalted status of a Minor Basilica. Thus, the Shrine of Vailankanni became the Shrine Basilica of Vailankanni on 3<sup>rd</sup> November, 1962 and was linked to the St. Mary's Major Basilica in Rome. Pope John Paul II declared this Shrine as 'Lourdes of the East' in the year 2002 (after the famous Lourdes in France).

The Basilica is built in the Gothic Style of architecture. The Basilica contains three chapels. The Lady's Tank, Church Museum, Priest's Residence, Offering Centre, Stations of the Cross, Stations of the Rosary and Shrine Mega Mahal are also frequented by pilgrims from across the country. The church is painted in white, except the roof which is made of red color tiles.

In 1974-75, an extension of the Basilica was built behind the existing central altar to accommodate the multi-lingual pilgrims. The extension included a two storied church with a high dome and high gothic spirals.

The Basilica draws nearly two million pilgrims each year from all over India and abroad. Prayers are offered in Tamil, Malayalam, Telugu, Kannada, Konkani, Hindi and English. The pilgrims include people of many faiths especially Hindus, Muslims and Christians of all denominations.

Department of Posts is happy to release a Postage Stamp to commemorate the Golden Jubilee Year of the Shrine Basilica of Vailankanni.

### Credits:-

Text : Mervin Alexander  
Stamp/FDC : Gulistaan  
Cancellation : Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग  
Department of Posts  
India

विवरणिका BROCHURE

श्राइन बसीलिका, वेलांकन्नी  
SHRINE BASILICA, VAILANKANNI



# श्राइन बसीलिका, वेलांकन्नी



## तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	:	22 जनवरी, 2013 22 January, 2013
मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	:	5.0 लाख* 0.5 Million*
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

\* 1.8 लाख प्रस्तावक हेतु  
\* 0.18 Million for the proponent

मूल्य ₹ 2.00

शैली में किया जाता है। अब यह निर्धारित किया गया है कि बसीलिका कहलाने के लिए किसी गिरजाघर में या तो कोई कलात्मक वस्तु होनी चाहिए या इसमें किसी संत को समाधिस्थ किया गया हो या उसमें कोई पूज्य चित्र लगाया गया हो या वह अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हो।

श्रद्धेय पोप जॉन पॉल XXIII ने इस श्राइन का दर्जा बढ़ाकर इसे माइनर बसीलिका बनाने के आदेश जारी किए। इस प्रकार वेलांकन्नी का श्राइन 3 नवंबर, 1962 को वेलांकन्नी का बसीलिका श्राइन बन गया और इसे रोम के सेंट मैरी मेजर बसीलिका से संबद्ध कर दिया गया। पोप जॉन पॉल द्वितीय ने वर्ष 2002 में इसे 'लॉर्ड ऑफ द ईस्ट' (फ्रांस के प्रसिद्ध लॉर्ड के नाम पर) घोषित किया।

इस बसीलिका का निर्माण वास्तुकला की गॉथिक शैली में किया गया है। इस बसीलिका में तीन प्रार्थनालय हैं। लेडीज टैंक, चर्च संग्रहालय, पादरी निवास, दान केन्द्र (ऑफरिंग सेंटर), स्टेशन ऑफ द क्रॉस, स्टेशन ऑफ द रोजरी और श्राइन मेगा महल के दर्शन करने भी देश भर से श्रद्धालु आते हैं। चर्च की पुताई सफेद रंग से की गई है, केवल छत को छोड़कर, जो लाल रंग की टाइलों से निर्मित है।

1974-75 में इस बसीलिका का विस्तार किया गया और मौजूदा मध्य वेदिका के पिछले हिस्से को बढ़ाया गया ताकि बहुभाषा-भाषी श्रद्धालुओं के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो सके। इस विस्तार कार्य में दो मंजिला गिरजाघर का निर्माण शामिल है, जिसका गुंबद काफी ऊंचा है और जो गॉथिक स्पाइरल से युक्त है।

भारत तथा विदेशों से प्रतिवर्ष लगभग बीस लाख लोग इस बसीलिका के दर्शन करने आते हैं। प्रार्थनाएं तमिल, मलयालम, तेलुगू, कन्नड, कोंकणी, हिन्दी और अंग्रेजी में की जाती हैं। श्रद्धालुओं में विशेष रूप से हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई समुदाय के सभी वर्गों के लोग शामिल होते हैं।

डाक विभाग वेलांकन्नी के श्राइन बसीलिका के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

### आभार :-

विषय वस्तु	:	मर्विन एलेक्जेंडर
डाक-टिकट /		
प्रथम दिवस आवरण	:	गुलिस्तां
विरूपण	:	नीनू गुप्ता

आवर लेडी ऑफ गुड हेल्थ वेलांकन्नी का श्राइन बसीलिका, एक रोमन कैथोलिक गिरजाघर है। यह तमिलनाडु में बंगाल की खाड़ी के रेतीले तट पर स्थित एक छोटी-सी बस्ती वेलांकन्नी में स्थित है जो कि चेन्नई (मद्रास) के दक्षिण में 350 किलोमीटर दूर तथा नागपट्टिनम के दक्षिण में 12 किलोमीटर दूर स्थित है। 1771 में इसका दर्जा बढ़ाकर इसे स्वतंत्र पैरिश बना दिया गया।

इस श्राइन का इतिहास 16वीं सदी में प्रारंभ हुआ, जब यह कहा जाता है कि ईसा मसीह की माता मदर मेरी ने एक गड़ेरिए बालक तथा एक दूधवाले को दर्शन दिए थे। मान्यता है कि मदर मेरी ने 17वीं सदी में बंगाल की खाड़ी में पुर्तगाली नाविकों को जहाज दुर्घटना से बचाया। उन कृतज्ञ नाविकों ने वेलांकन्नी, जहां वे जमीन पर उतरे, में मदर मेरी के सम्मान में एक छोटे-से श्राइन की स्थापना की। इन नाविकों का विश्वास था कि मदर मेरी ने ही उन्हें सुरक्षा प्रदान की। नाविकों ने इस श्राइन को चीनी कला से बने पवित्र चित्र से सजाया। तभी से यह पूजा स्थल प्रसिद्ध हो गया।

वेलांकन्नी मायलापुर (चेन्नई का एक उप नगर) के डायोसीस के बिशप के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आता था। उस दौरान मायलापुर डायोसीस पुर्तगाली 'पेडराओडो' (संरक्षण) में था। पेडराओडो प्रणाली के अंतर्गत पुर्तगाल के सम्राट द्वारा ही मायलापुर डायोसीस के सभी खर्चे उठाए जाते थे। यह डायोसीस रोमन पॉन्टिफ के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आता था।

1847 तक सेंट फ्रांसिस्कन मिशनरी के पादरी, जिन पर गोवा और मायलापुर प्रांत का कार्यभार था, नागपट्टिनम और वेलांकन्नी का भी कार्यभार देखते थे। लिसबन के सेंट एंथनी और असीसी के सेंट फ्रांसिस को 1961 तक वेदिका (ऑल्टर) पर 'आवर लेडी' के चमत्कारी चित्र के दोनों तरफ सम्मानित स्थान प्रदान कर इस श्राइन के फ्रांसिस्कन मूल और स्वामित्व को भी प्रमुखता प्रदान की गई।

बसीलिका शब्द का उद्भव यूनानी शब्द 'बेसिलिके' से हुआ है, जिसका मूल तात्पर्य रॉयल हॉल है। तदंतर इस शब्द का अर्थ विशाल और सुंदर हॉल हो गया। आज के अर्थ में बसीलिका एक पवित्र गिरजाघर है, जिसका अग्रभाग पूर्व दिशा की ओर बनाया जाता है। आम तौर पर इसका निर्माण वास्तुकला की किसी क्लासिकल